

- वाणी सुभाषित सुधा, शुचि 'बीर' की है, थी पूर्व प्राप्त न, आगली जीवन ॥
- क्यों मृत्यु से फिर डूँड़, तज सर्व-प्रथि, मैं हो गया जब प्रभो॥७४८॥
749. I have attained that well said vector like jina-vachan today that I never attained jnana accordingly adopted that way of achieving jnana of life.
- I do not fear death now.
- (44) वीररत्वन
- ७४६ ए हि पृण पुरा अणुस्सुयं, अदुबा तं तह पो अणुद्दिणं ।
मुणिणा समाइ आहियं, णाणण जग-सब्ब-दंसिणा ॥२ ॥
- श्री वीर ने सुपथ यहपि था दिखाया, था कोटिः: सदुपदेश हमें सुनाया।
धिकार! किन्तु हमसे उसको सुना ना, मानो! सुना पर कभी उसको गुना ना॥२॥
746. The omni percept son of jnat, lord Mahavir had preached
about equanimity (Samauk) etc. but the mundane souls
either did not listen to it or having listened to it did not
follows it same.
- ७४७-७४८ अत्तण जो जाणइ जो य लोगं, जो आगति जाणइउगति च
जो सामयं जाण असासं च जाति मरणं च बयणोववातं ॥
अहो विः सत्तण वि उडहणं च, जो आसवं जाणति संवरं च
दुक्षबं च जो जाणइ णिन्जरं च,सो भासित-मरिहति किरियवादं ॥
- जो साधु आगति-अनागति कारणों को, पीड़ा प्रमोदप्रद आसव-संवरों को।
औ जन्म को मण को निज के गुणों को, त्रैलोक्य में स्थित अशाश्वत शाश्वतों को॥३॥
- औ स्वर्ग को नरक को दुख निजरा को, है जानते च्यवन को उपपादता को।
श्री मोक्ष-पथ प्रतिपादन कार्य मैं है, वे योग्य वंदन त्रिकाळ कँड़ उठें मैं॥४॥
- 747-748. He (alone) can properly preach about Right thought and
Right conduct (samyak achhar-vichar) ie. ritualism (kriya vad),
who knows present and future immortal and mortal birth and
death dripping and being reborn in heavens; inflow and
stoppage of karmas; sorrow and shedding off of karmas.
- ७४९ लद्वं अलद्वं-पुल्वं, जिण-ब्यण-सुभासिदं अमिद-भूदं ।
गहिदो सुगणइ-मणो, पाहं मरणस्स बीहेमि ॥५ ॥

गुरु-रम्पति-रसुति

मैं आपकी सदुपदेश सुधा न पीता,
जाती लिखी न मुझ से यह 'जैन-गीता' ।
दो 'ज्ञानसार गुरों!' मुझ को सुविद्या,
'विद्यादिसार' बड़ूं तज दूँ अविद्या ॥१॥

भूल-क्षम्य

लेखक कवि मैं हूँ नहीं, मुझ मैं कुछ नहिं ज्ञान ।
त्रुटियाँ होवें यदि यहाँ, शोध पहुँ धीमान ॥२॥

मंगल-कामना

यही प्रार्थना 'बीर' से अनुनय से कर जोर ।
हरी-भरी दिखती रहे, धरतीचारों और ॥३॥
मरहन पहुँ बांध के, बुण का कर उपचार ।
ऐसा यदि ना बन सके, डंडा तो मत मार ॥४॥
फूल बिछाकर पंथ मैं, पर प्रति बन अनुकूल ।
शूल बिछाकर भूल से, मत बन तू प्रतिकूल ॥५॥
तजो रजोगुण, साम्य को- सजो, भजो निज-धर्म ।
शम मिले, भव दुःख मिटे, आशु मिटे वसु कर्म ॥६॥

रचना स्थान एवं समय परिचय

'श्रीधर-केवलि' शिव गाये, कुण्डलगिरि से हर्ष ।
थारा वर्षायोग उन, चरणन मैं इस वर्ष ॥७॥
'बड़े बाबा' बड़ी कृपा, की मुझ पै आदीश ।
पर्ण हुई मम कामना, पाकर जिन आशीष ॥८॥
'संग-गगन-गति-गंध' की भाटु पदी सित तीज ।
पूर्ण हुआ यह ग्रंथ है, भुक्ति-मुक्ति का बीज ॥९॥